BRILLION Publishing

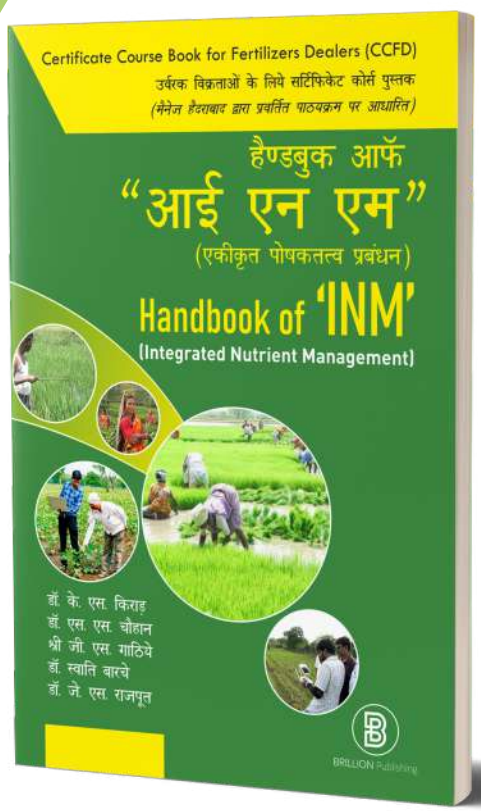

हैण्डबुक आफॅ "आई एन एम" (एकीकृत पोषकतत्व प्रबंधन)

Handbook of 'INM' (Integrated Nutrient Management)

Certificate Course Book for Fertilizers Dealers (CCFD)

ISBN: 978-93-86658-24-1
Pages: 303
2021
Printed Copy
Hardbound ₹ 2495/-

डॉ. के. एस. किराड़ • डॉ. एस. एस. चौहान
श्री जी. एस. गाठिये • डॉ. स्वाति बारचे • डॉ. जे. एस. राजपूत

विषय सूची

- पादप, पादप पोषण एवं पौधों द्वारा पोषक तत्व ग्रहण करने की प्रक्रिया।
- कृषि पारिस्थितिकीय, कृषिजलवायु क्षेत्रीय योजनाऐं फसलउत्पादन के लिए मौसमीय दशाऐं
- मिट्टी के प्रकार, मृदा में पोषक तत्व-प्राथमिक, द्वितीयक, सूक्ष्म पोषक तत्व।
- पौधों में प्राथमिक एवं द्वितीयक पोषक तत्वों के कार्य एवं पौधों में उनकी कमी के लक्षण।
- पौधों में सूक्ष्म पोषक तत्वों के कार्य एवं उनकी कमी के कारण पौधों में दिखाई देने वाले लक्षण।
- विभिन्न पोषक तत्वों के उपलब्ध स्वरूप एवं पोषक तत्वों की पूर्ति करने वाले उर्वरक एवं उनमें पोषक तत्वों की पायी जाने वाली मात्रा।
- खाद और उर्वरक एवं उनका वर्गीकरण।
- पोषक तत्व के आधार पर उर्वरकों की गणना करना
- उर्वरक के पर्णीय छिड़काव हेतु घोल तैयार करना, मृदा उर्वरता की अवधारणा, मृदा स्वास्थ्य एवं इसमें कार्बनिक खादों का महत्व, उर्वरक अनुप्रयोग का पर्यावरण पर प्रभाव एवं मिट्टी में उर्वरक क्षरण रोकथाम के उपाय।
- कार्बनिक खादों के विभिन्न स्रोत जैसे FYM "गोबर खाद", हरी खाद, केंचुआ खाद मुर्गी की खाद, NADEP, फसल अवशेष खाद, वेस्ट डिकम्पोज़र खाद विभिन्न खादों की बनाने की विधि।
- सूक्ष्म जीव आधारित उर्वरक जैसे राइज़ोबियम, एजेटोवैक्टर, स्फुरघोलक जीवाणु, पोटाश घोलक जीवाणु, जिंक घोलक जीवाणु (VAM), इत्यादि। तरल खाद पंचगव्य, जीवामृत, ब्रम्हास्त्र आदि।
- विभिन्न जैव उर्वरकों के अनुप्रयोग की विधि एवं उनकी मात्रा तथा उपयोग में सावधानियाँ।
- समस्याग्रस्त मृदा की अवधारणा "अम्लीय, क्षारीय, लवणीय, मृदा विशाक्तता", मृदा का पौधों के पोषक तत्वों के ग्रहण पर प्रभाव, विभिन्न मृदा सुधारक जैसे चूना, जिप्सम एवं उनका मृदा सुधारक के रूप में प्रयोग।
- मिट्टी एवं जल परीक्षण का महत्व एवं उनका नमूना लेने के तरीके, विभिन्न मृदा परीक्षक किट।
- मृदा परीक्षण के आधार पर मृदा स्वास्थ्य हेतु इसमें चूना की मात्रा का निर्धारण।
- समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन की अवधारणा, फसल चक्र एवं उसका महत्व एवं आदान अनुप्रयोग क्षमता वृद्धि हेतु उर्वरक देने के तौर-तरीके।
- मृदा में विभिन्न पोषक तत्वों का स्तर एवं विभिन्न फसलों के लिये उर्वरक एवं खाद की अनुशंसित मात्र।
- उर्वरक गुण नियंत्रण आदेश 1985 एवं इसमें समसामयिक संशोधन, बिक्री केन्द्र मशीन (POS) कार्य।
- कृषकों से सम्पर्क बनाने के लिए संचार एवं विस्तार तकनीकी, कृषि में सूचना एवं संचार तकनीकी के साधन ।
- मृदा स्वास्थ्य एवं समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित अन्य विषय एवं योजनाऐं।

For e-version of the book or sample chapter for personal perusal contact:
info@brillionpublishing.com
www.brillionpublishing.com